हितैषी -2016

हिमालयन पर्यावरण, जलस्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा संस्था

हितैषी संस्था- हिमालयन पर्यावरण जल स्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा संस्था जो पिछले 25 वर्षो से सामाजिक कार्यो के माध्यम से सामुदायिक विकास, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जागृति व महिला सशक्तीकरण के लिए प्रयासरत है। संस्था के कार्यो में भी नये कार्यो -विचारों का सृजन हुआ, और यह समझ बनी कि गांवो की आर्थिक रूप से मजबूती अनिवार्य है। आर्थिक मजबूती तभी आयेगी जब हम खूब श्रम करें,श्रम के महत्व को समझते हुए छोटे-छोटे लघु कुटीर उद्योगों के माध्यम से पहल करते हुए स्वालंबी बनें। तथा यह सब तभी हो सकता है जब हम श्रम का सम्मान करना सीखते हैं। हितैषी ने द्यौनाई घाटी क्षेत्र में श्रम के सम्मान का एक अनूठे कार्यक्रम की पहल की है।

हितैषी शिक्षा के क्षेत्र में हितैषी विद्यानिकेतन के रूप में पर्यावरणीय शिक्षण का कार्य क्षेत्र में गरीब परिवारों के बच्चों के साथ कर रही है। इस समय विद्यालय में 15 गांवों के लगभग 100 बच्चें अध्ययनरत है। जिसे ग्रामीण क्षेत्र के ही युवक युवतियां इस कार्य को एक मिशन के रूप में कर रहे हैं। इस शिक्षण संस्थान के माध्यम से प्रतिवर्ष 100 बच्चे नि:शुल्क अध ययन कर पाते है और संस्कारित हो रहे हैं।

हितैषी ने पर्यावरण संरक्षण तथा पहाड़ की जैव विविधता को बचाने सँवारने हेतु श्रम के सम्मान का प्रयास किया है। जिसके माध्यम से श्रम करने वाले युवक, युवतियों / महिला पुरूषों को उनके विशेष योगदान जैसे- कृषि, पशुपालन , सब्जी उत्पादन, जैविक खेती, जड़ी बूटियों का ज्ञान, जल संरक्षण करने वाले लोगों को सम्मानित किया जाता है। इस कार्य का प्रभाव यह दिखने में आ रहा है। कि लोग अपने खेती, पशुधन, जंगल, पानी गांवो के प्रति उनका मोह बढ़ रहा हैं। और श्रम के प्रति नई पीढ़ी प्रेरित हो रही है जिसका सीधा असर यहाँ की खेती तथा पलायन पर पड़ रहा है, अर्थात पलायन कम हो रहा है।

संस्था के इस शिक्षण कार्य के सहभागी विचारवान साथी तथा श्रम के सम्मान के साथ जुड़े ऊर्जावान साथियों का निरन्तर साथ बना रहे तभी गांव व पहाड़ो को अन्य साथी भी लौटेंगे तथा श्रमशील लोगों को और अधिक ऊर्जा व ऊष्मा मिलेगी।

हम आशा करते हैं कि हितैषी के इन संघर्षरत साथियों के साथ बने रहेगें इसी विश्वास के साथ-

आपका

किशन राना

सचिव

वार्षिक प्रतिवेदन- 2016

हितैषी- हिमालयन पर्यावरण जल स्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा संस्थान एक अलाभकारी, चैरिटी के साथ काम करने वाली गैर राजनैतिक संस्था है। संस्था 90 के दशक से ही समाज के साथ शिक्षा , पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती, आजीविका सम्बर्द्धन, महिला सशक्तिकरण व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए संघर्षरत है।

संस्था बिना किसी प्रोजेक्ट या आर्थिक सहयोग के उत्तराखण्ड जिला बागेश्वर के गरूड़ ब्लाक में जिसे कत्यूर क्षेत्र कहा जाता है। में एक छोटी सी कोशिश के माध्यम से प्रयासरत है जिसके अन्तर्गत समाज को जागरूक कर जल, जंगल, जमीन को संरक्षित कर स्वालम्बी बनाना है। तभी ग्राम स्वराज की कल्पना साकार होगी।

1- ग्राम चेतना पद यात्रा- संस्था ने चार दिवसीय पदयात्रा का आयोजन द्यौनाई घाटी क्षेत्र में किया, जिसमें मुख्यतया नुक्कड़ नाटकों, गीतों, बैठकों के माध्यम से सामाजिक कुप्रथाओं के खिलाफ चोट करना था, वही अंध विश्वास, छुआछूत, दहेज, शराब, गुटखा, के प्रति जागरूक करना भी था। जो हमारे समाज व हमारे लिए घातक है। जैविक खेती, पर्यावरण संरक्षण तथा बदलते मौसम चक्र **(ग्लोबल वार्मिंग)** का प्रभाव जो स्पष्ट रूप में दिखता है। इस पर हर जगह-जगह पर मीटिंग गोष्ठियों के माध्यम से चेतना पद यात्रा की गई।

चेतना पदयात्रा में लक्ष्मी आश्रम कौसानी की बहनें व प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता राधा बहन, राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित बसन्ती बहन, विदेश के आई शिवासेन, माधुरी तथा आरोही संस्था के सहयोगियों-पदयात्रियों ने सहभाग किया।

पदयात्राएं आदमी को अपने गांव, मिट्टी के करीब तक लाती है, और एहसास कराती है कि हम सुख-दुख, समस्यायें, लोक परम्पराओं, गीतों, पर्यावरण को करीब से समझने का मौका देती है। और एहसास कराती है कि हम विकास टैक्नौलॉजी में कितने ही आगे क्यों न बढ़ जाए किन्तु प्रकृति के चमत्कार के सामने बौने साबित होते हैं।

अन्त में जमना लाल बजाज पु. से सम्मानित राधा दीदी ने पदयात्रा के समापन पर चौथे दिन युवाओं से आह्वाहन किया कि यह समाज महिला / पुरूष से मिलकर बना है इसलिए हमें कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा तभी सुख समृद्धि व सुखद समाज की कल्पना साकार होगी।

स्वंय सहायता समूह- पिछले छः वर्षो से चल रहा स्वंय सहायता समूह जिसमें महिलाओं के करीब 85 हजार रूपये बचत हो गये थे। जिसके माध्यम से महिलाएं कर्ज लेकर समूह के बचत का इस्तेमाल कर रही थी जैसे- शौचालय निर्माण, बकरी, गाय, बेटी की शादी इत्यादि में उपयोग किया जा रहा था। समूह ने निर्णय लिया कि बचत को बांट दिया जाय। समूह के बचत धन को सर्वसम्मति से बांट दिया गया। इस तरह के प्रयास से संस्था ने गांव को संगठन के रूप में जोड़ कर बचत के माध्यम से आम परिवारों की मदद का प्रयास किया था, जो सफल रहा।

उत्तराखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी के सहयोग से आजीविका संवर्द्धक हेतु गोष्ठी– हितैषी तथा उत्तराखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी के माध्यम से आजीविका संम्वर्द्धन के तरीके, परम्परागत उत्पादों का विपणन, किसान समूहों तथा किसान फेडरेशन के बारे में चर्चा हुई। दो दिवसीय गोष्ठी में IIM बंगलरू के प्रोफेसर त्रिलोकचन्द्र शास्त्री प्रो0 रानाडे तथा ओपन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर गिरिजा पाण्डे जी ने अपने अनुभवों को गोष्ठी तथा गांव में समूहों को बांटा। इससे समूह को काफी लाभ हुआ। संस्था ऐसे अनुभवी विद्वानों तथा ग्रामीणों को साथ लाने का प्रयास लगातार करते रहती है।

किर्साण सम्मेलन– 'किर्साण' का अर्थ होता है मेहनतकश / अर्थात श्रमशील । उत्तराखण्ड में जो भी महिला / पुरूष बहुत अधिक मेहनतकश होता है उसे किर्साण कहा जाता है। लेकिन हितैषी ने पिछले दशक में कार्य करते हुए पाया कि नई पीढ़ी का रूझान मेहनत की तरफ कम और बगैर काम किये अधिक पाने की लालसा ज्यादा है। अर्थात् मुफ्त में पाना चाहते हैं। जो इस पहाड़ या कही भी अच्छा संकेत नही है। लेकिन पुरानी पीढ़ी अभी भी अपने खेती, पशुधन , जंगल, पर्यावरण व सामाजिक ताने–बाने के साथ गहराई से जुड़ी है, और अथक परिश्रम के बाद उत्तराखण्ड की धरती को हरा–भरा व आबाद किया है। लेकिन हमने पाया कि आज के समय में घर, परिवार, समाज में मेहनतकश, ईमानदार व्यक्ति का सम्मान कम और वह हाशिये पर है। जबकि अकर्मण्य व दिखावा करने वाले लोग सभी जगह सम्मान पाते हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में हितैषी ने सोचा कि सम्मान का हकदार वह है जो उत्तराखण्ड की रीढ़ कही जाती है– यहाँ की कर्मठ महिला या कर्मठ पुरूष जो अपनी मेहनत के बल पर पहाड़ों में टिके हैं। और इसे हरा–भरा किया है।

हितैषी ने न्याय पंचायत भगरतोला के 12 ग्राम सभाओं के लगभग 35 गांवो से चुनिन्दा किर्साणों को प्रतियोगिता में चयनकर तथा अन्त में 30 महिलाओं से जल, जंगल, जमीन व सामाजिक ताने बाने के सवाल जवाब के बाद पुरस्कृत किया जाता है। प्रथम विजेता को एक भैंस तथा द्वितीय विजेता को गाय तृतीय को एक पालीहाउस, निर्णायक कमेटी द्वारा क्षेत्र के महिला सम्मेलन में सम्मानित किया जाता है, तथा प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह् के साथ शॉल भेंट किया जाता है।

उल्लेखनीय बात यह है कि भैंस, गाय, पालीहाउस को उसकी आजीविका, पर्यावरण, समृद्धि, जैविक खेती तथा पोषण के साथ जोड़ते हुए नई पीढ़ी को इसके लिए प्रेरित करना है। इसमें हम सफल भी हुए है ऐसा प्रत्यक्ष रूप से दिखता है।

अन्त में हितैषी अपने सहयोगी/ शुभचिंतको जो हितैषी के संघर्ष को समझते हैं। आप सभी का ह्दय से आभार व्यक्त करते है। आपने हितैषी के कार्यो को सराहा और स्वीकारा। आप सभी मित्रों से सतत प्राप्त प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग, मार्गदर्शन शुभकामनाएं हमको काम करने की ऊर्जा व उत्साह प्रदान करते हैं। आप इसी तरह से हमारे सहयोगी और मार्गदर्शक बनकर हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे, ऐसी हमारी अपेक्षा है।

सधन्यवाद

हितैषी– द्यौनाई (गरूड़)
बागेश्वर 263641 (उत्तराखण्ड)